6

स्वस्ति सूक्त

प्रिय शिक्षार्थी पूर्व पाठ में आपने विष्णु सूक्त के माध्यम से विष्णु की विशेषताओं को जाना। इस पाठ में आप स्वस्ति के विषय में पढ़ेंगे। स्वस्ति सूक्त के मंत्रों का उच्चारण और अर्थज्ञान इस पाठ में दिया गया है।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- स्वस्ति सूक्त का उच्चारण कर पाने में; और
- स्वस्ति सूक्त का अर्थ ज्ञान कर पाने में ।

6.1 स्वस्ति सूक्त

स्व॒स्ति नो॑ मिमीताम॒श्विना॒ भगः॑ स्व॒स्ति दे॒व्यदि॑तिरन॒र्वणः॑ ।

स्व॒स्ति पू॒षा असु॑रो दधातु नः स्व॒स्ति द्यावा॑पृथि॒वी सु॑चे॒तुना॑ ॥

sva̱sti nó mimītām a̱śvinā̱ bhagás sva̱sti de̱vyaditir anarvaṇáḥ |

sva̱sti pū̱ṣā asúro dadhātu nas sva̱sti dyāvā̈ pṛthivī súce̱tunā̈ || 1 ||

हे मनुष्यो ! जैसे अध्यापक और उपदेशक लोग अश्वरहित का सुख रचें और ऐश्वर्य्य को करने वाला वायु हम लोगों के लिये सुख, प्रकाशित अखण्डविद्या हम लोगों के लिये सुख, उत्तम विज्ञापन से प्रकाश और भूमि हम लोगों के लिये सुख, और पुष्टि करने वाला दुग्धादि पदार्थ और मेघ हम लोगों के लिये सुख को धारण करे, वैसे आप लोगों के लिये भी वे सुख को धारण करें ।।1।।

स्व॒स्तये॑ वा॒युमुप॑ ब्रवामहै॒ सोमं॑ स्व॒स्ति भुव॑नस्य॒ यस्पतिः॑ ।

बृह॒स्पतिं॒ सर्व॑गणं स्व॒स्तये॑ स्व॒स्तय॑ आदि॒त्यासो॑ भवन्तु नः ॥

svastaye vāyum upabravāmahai somaggas svasti bhuvanasya yaspatiḥ |

bṛhaspatigum sarva gaṇaggas svastaye svastaya ādityāso bhavantu naḥ || 2 ||

हे मनुष्यो ! जैसे हम लोग सुख के लिये वायुविद्या और ऐश्वर्य् का उपदेश देवें, वैसे सुनकर आप लोग अन्यों के प्रति उपदेश दीजिये। और जो लोक का स्वामी है वह संकट दूर होने के लिये सम्पूर्ण समूह जिसमें उस बड़ी वेदवाणियों के स्वामी को और हम लोगों के लिये सुख को धारण करे और जैसे अड़तालीस वर्ष परिमित ब्रह्मचर्य् से विद्याभ्यास किया है तथा जो मास के सदृश सम्पूर्ण विद्याओं में व्याप्त हैं, वे हम लोगों के अर्थ अत्यन्त सुख के लिये होवें, वैसे आप लोगों के लिये भी हों ।।२।।

विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये ।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ॥

viśve devā no adyā svastaye vaiśvānaro vasuragnis svastaye |

devā avantvṛbhavas svastaye svasti no rudraḥ pātvagum hasaḥ || 3 ||

हे मनुष्यो ! जैसे आज सम्पूर्ण विद्वान् जन सुख के लिये हम लोगों की रक्षा करें और सुख के लिये समस्त मनुष्यों में प्रकाशमान सर्वत्र वसनेवाला अग्नि रक्षा करे और बुद्धिमान् विद्वान् जन विद्यासुख के लिये रक्षा करें और दुष्टों को दण्ड देनेवाला सुख की भावना करके हम लोगों की अपराध से रक्षा करे। ।। 3 ।।

स्व॒स्ति मि॑त्रावरुणा स्व॒स्ति प॑थ्ये रेवति ।
स्व॒स्ति न॒ इन्द्र॑श्चा॒ग्निश्च॑ स्व॒स्ति नो॑ अदिते कृधि ॥

sva̱sti mi̍trā varuṇā sva̱sti pa̍thye revati |

sva̱sti na indra̍ścā̱gniśca̍ sva̱sti no̍ adite kṛdhi || 4 ||

हे खण्डितविद्या से रहित, बहुत धन से युक्त ! आप मार्गयुक्त कर्म में जैसे प्राण और उदान हम लोगों के लिये सुख और वायु सुख को और बिजुली सुख हम लोगों के लिये सुख करती है, वैसे सुख करिये ।।४।।

स्व॒स्ति पन्था॒मनु॑ चरेम सूर्याचन्द्र॒मसा॑विव ।
पुन॒र्दद॒ताघ्न॑ता जान॒ता सं ग॑मेमहि ॥

svasti panthām anúcarema sūryā candrama sáviva |

punar dadatā 'ghnátā jānatā saṁ gámemahi || 5 ||

हम लोग सूर्य और चन्द्रमा के सदृश सुख मार्गों के अनुगामी हों और फिर दान करने और नहीं नाश करने वाले विद्वान् के साथ मिलें ।।५।।

पाठगत प्रश्न– 6.1

(1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. स्वस्ति पूषा .... दधातु ।
2. स्वस्ति .... यस्पतिः ।
3. .... देवा नों अद्या स्वस्तयें ।
4. स्वस्ति .... स्वस्ति ।
5. स्वस्ति पन्थामनुं .... सूर्याचन्द्रमसांविव ।

आपने क्या सीखा?

- स्वस्ति सूक्त के मंत्रों का उच्चारण करना।
- स्वस्ति सूक्त का अर्थ ज्ञान।

पाठांत प्रश्न

1. स्वस्ति सूक्त का सार अपने शब्दों में लिखिए।

Reference:

1. Rig Ved [5.051.11 to 5.051.15]

उत्तरमाला

6.1

(1)

1. असुंरो
2. भुवंनस्य॒
3. विश्वे॑
4. मिंत्रावरुणा
5. चरेम